

श्री सरस्वती चालीसा
जनक जननपिदमरज, नजि मस्तक पर धरी
बन्दौ मातु सरस्वती, बुद्धबिल दे दातारी॥
पूरण जगत में व्याप्त तव, महामि अमति अनंतु ।
दुषजनों के पाप को, मातु तु ही अब हन्तु ॥

जय श्री सकल बुद्धबिलरासी । जय सर्वज्ञ अमर अविनाशी ॥
जय जय जय वीणाकर धारी । करती सदा सुहंस सवारी ॥

रूप चतुरभुज धारी माता । सकल वशिव अन्दर वख्याता ॥
जग में पाप बुद्धजिब होती । तब ही धर्म की फीकी ज्योती ॥

तब ही मातु का नजि अवतारी । पाप हीन करती महतारी ॥
वाल्मीकजी थे हत्यारा । तव प्रसाद जानै संसारा ॥

रामचरति जो रचे बनाई । आदिकविकी पदवी पाई ॥
कालदास जो भये वख्याता । तेरी कृपा दृष्टिसे माता ॥

तुलसी सूर आदिविद्वाना । भये और जो ज्ञानी नाना ॥
तनिह न और रहेउ अवलम्बा । केव कृपा आपकी अम्बा ॥

करहु कृपा सोइ मातु भवानी । दुखति दीन नजि दासहिजानी ॥
पुत्र करहि अपराध बहूता । तेहिनि धरई चति माता ॥

राखु लाज जननअब मेरी । वनिय करउं भांताबिहु तेरी ॥
मैं अनाथ तेरी अवलंबा । कृपा करउ जय जय जगदंबा ॥

मधुकैटभ जो अतबिलवाना । बाहुयुद्ध वषिणु से ठाना ॥
समर हजार पाँच में घोरा । फरि भी मुख उनसे नहीं मोरा ॥

मातु सहाय कीन्ह तेहिकाला । बुद्धविपरीत भई खलहाला ॥
तेहिति मृत्यु भई खल केरी । पुरवहु मातु मनोरथ मेरी ॥

चंड मुण्ड जो थे वख्याता । कषण महु संहारे उन माता ॥
रक्त बीज से समरथ पापी । सुरमुनिहृदय धरा सब काँपी ॥

काटेउ सरि जमिकदली खम्बा । बारबार बनि वउं जगदंबा ॥
जगप्रसदिध जो शुंभनशुंभा । कषण में बाँधे ताहि तू अम्बा ॥

भरतमातु बुद्धफेरेऊ जाई । रामचन्द्र बनवास कराई ॥
एहविधिरावण वध तू कीन्हा । सुर नरमुनि सबको सुख दीन्हा ॥

को समरथ तव यश गुन गाना । नगिम अनादिअनंत बखाना ॥
वषिणु रुद्र जस कहनि मारी । जनिकी हो तुम रक्षाकारी ॥

रक्त दन्तिका अँ र है दानव भक्षी ॥
Holy Drops Be with God

दुर्गम काज धरा पर कीन्हा । दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा ॥

दुर्ग आदहिरनी तू माता । कृपा करहु जब जब सुखदाता ॥
नृप कोपति को मारन चाहे । कानन में घेरे मृग नाहे ॥

सागर मध्य पोत के भंजे । अत तूफान नहिकोऊ संगे ॥
भूत प्रेत बाधा या दुःख में । हो दरदिर अथवा संकट में ॥

नाम जपे मंगल सब होई । संशय इसमें करई न कोई ॥
पुत्रहीन जो आतुर भाई । सबै छांड़ि पूजै एहि भाई ॥

करै पाठ नति यह चालीसा । होय पुत्र सुन्दर गुण ईशा ॥
धूपादकि नैवेद्य चढ़ावै । संकट रहति अवश्य हो जावै ॥

भक्तभातु की करै हमेशा । नकिट न आवै ताहिकिलेशा ॥
बंदी पाठ करै सत बारा । बंदी पाश दूर हो सारा ॥

रामसागर बाँधि हेतु भवानी । कीजै कृपा दास नजि जानी ।

॥ दोहा ॥

मातु सूर्य कान्ता तिव, अन्धकार मम रूप ।
डूबन से रक्षा करहु परूँ न मैं भव कूप ॥
बलबुद्धि विद्या देहु मोहि, सुनहु सरस्वती मातु ।
राम सागर अधम को आश्रय तू ही देदातु ॥